Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

24 नवंबर, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

युद्धकाल में बौद्ध धर्म की उपयोगिता-आईएसबीएस का दूसरा दिन

- **दूसरे दिन 4 सत्रों में 50 शोध-पत्र पढ़े गये**
- **चित्त की शुद्धि के लिए धम्म उपदेश उपयोगी**

साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज़ के रजत जयंती समारोह के दूसरे दिन बौद्ध धर्म, पालि भाषा, युद्धकाल में बौद्ध धर्म की व्यावहार्यता और अप्लाइड बुद्धिस्म पर चर्चा हुई। सामान्य सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. अरविंद जामखेड़कर रहे। उन्होने मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की बौद्ध स्थापत्य कला पर विचार रखें। उन्होने साँची स्तूप के कई अनछुए पहलुओं को भी सामने रखा।

आज हुए तीन समानांतर सत्रों में 50 शोधपत्र पढ़े गये। प्रो सुष्मिता पाण्डे की अध्यक्षता में हुए सत्र में शोधार्थी ने मध्य प्रदेश की पुरातात्विक महत्व की साइट तुमेन पर अपने विचार रखे। भरहुत तथा साँची स्तूप के मानव मूल्यों को भी आंका गया। बौद्ध स्थापत्य कला में डर और साहस के दर्शन को जांचा गया। इसी तरह भारत और थाइलैंड के रिश्तों को भी बौद्ध सर्किट के साथ मापा गया।

प्रो. बंदना मुखर्जी की अध्यक्षता में दूसरे सत्र में धम्म पद पर, धम्म उपदेश में चित्त की शुद्धि के वर्णन, बंगाल में बौद्ध दर्शन का पुनर्रुत्थान, श्रीलंका में बुद्ध धम्म की विचार कथा, थेरगाथा में स्त्री का चित्रण, जातक कथाओं का हिंदी साहित्य पर प्रभाव जैसे विषयों पर चर्चा की गई। इस सत्र में भी 10 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। अंधश्रद्धा को छोड़ वेदना निवारण के लिए चित्त शुद्धि पर जोर दिया गया।

तीसरे समानांतर सत्र में अध्यक्षता की प्रो. केदार नाथ शर्मा ने। इस सत्र में बौद्ध दर्शन के व्यवहारिक पहलू पर विशेष चर्चा की गई। सत्र में अध्ययन किया गया कि किसी भी व्यक्ति के आम जीवन में किस प्रकार बौद्ध दर्शन उपयोगी होता है। वर्तमान दौर में कैसे बौद्ध दर्शन हल बन सकता है। बौद्ध दर्शन की कल्याणकारी अर्थव्यवस्था के बारे में चर्चा की गई। विश्व और चीन के संदर्भ में बौद्ध दर्शन के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया। वर्तमान काल में बौद्ध नीति शिक्षा, बौद्ध दर्शन में शांति की स्थापना, करुणा एवं कर्म इत्यादि विषयों पर 10 शोधपत्र पढ़े गए। आमंत्रित समस्त शिक्षक, विद्वान व, शोधार्थियों ने बोधि वृक्ष के दर्शन किए। इसके उपरांत उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण भी किया। जिसके बाद सभी आमंत्रित सांची स्तूप भी पहुंचे।

आई.एस.बी.एस के रजत जयंती समारोह में तीसरे और अंतिम दिवस दो विशेष सत्र आयोजित किए गए हैं जिसमें प्रो. अरविंद जामखेड़कर, प्रो. सिद्धार्थ सिंह और सांची विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ चर्चा करेंगे। दोपहर में समापन सत्र में श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के वेनेगल उपतिस्स नायक थैरो शामिल होंगे।

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

दैनिक भास्कर

2025-11-25
रायसेन (3)

आयोजन • सांची विश्वविद्यालय में इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज़ का रजत जयंती समारोह

देशभर से आए विद्वानों ने 50 शोधपत्र प्रस्तुत किए, बौद्ध चिंतन के विविध आयामों पर चर्चा

अदनान खान | सलामतपुर

मप्र और महाराष्ट्र की बौद्ध स्थापत्य परंपरा पर प्रो. अरविंद ने किया विश्लेषण

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज (आईएसबीएस) के रजत जयंती समारोह का दूसरा दिन बौद्ध दर्शन, पालि भाषा, युद्धकाल में बौद्ध विचारधारा की उपयोगिता और अप्लाइड बुद्धिज्म की गहन चर्चा के नाम रहा। सोमवार को आयोजित चार सत्रों में देशभर से आए विद्वानों ने 50 शोधपत्र प्रस्तुत किए और बौद्ध चिंतन के विविध आयामों पर अपने विचार रखे। सामान्य सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. अरविंद जामखेड़कर ने मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की बौद्ध स्थापत्य परंपरा का विस्तृत विश्लेषण किया। उन्होंने सांची स्तूप की शिल्प-संरचना और उसकी अनछुई विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भारतीय बौद्ध कला का विकास इतिहास और आध्यात्मिक विचार का अनूठा संगम है।

इसके बाद हुए तीन समानांतर सत्रों में शोधार्थियों ने बौद्ध विरासत, मानव मूल्यों, और भारतीय–थाई संबंधों पर गहन विमर्श किया। प्रो. सुष्मिता पांडे की अध्यक्षता वाले सत्र में मध्य प्रदेश की पुरातात्विक साइट तुमेन पर शोध प्रस्तुत हुआ। वहीं भरहुत और सांची स्तूप से संप्रेषित मानवीय मूल्यों एवं स्थापत्य में प्रकट भय–साहस के द्वैत का विश्लेषण किया गया।

सलामतपुर। सांची बौद्ध विवि में रजत जयंती समारोह में विद्वानों ने रखे विचार।

'जातक कथाओं के हिंदी साहित्य पर प्रभाव' विषय पर चर्चा

प्रो. वंदना मुखर्जी की अध्यक्षता वाले दूसरे सत्र में धम्म पद, धम्म उपदेश, चित्त शुद्धि, बंगाल में बौद्ध दर्शन के पुनरुत्थान, श्रीलंका के बुद्ध धम्म विमर्श, थेरगाथा में स्त्री चित्रण तथा जातक कथाओं के हिंदी साहित्य पर प्रभाव जैसे विषयों पर चर्चा हुई। यहां प्रस्तुत शोधों में यह विचार उभरा कि आधुनिक जीवन में दुःख और वेदना के निवारण के लिए चित्त शुद्धि धम्म का मूल तत्व है। तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. केदारनाथ शर्मा ने की। इसमें बौद्ध दर्शन की व्यवहारिक उपयोगिता पर विशेष ध्यान दिया गया। विश्व राजनीति और चीन के संदर्भ में बौद्ध दृष्टिकोण की भूमिका पर भी शोध प्रस्तुत हुए।

प्रतिभागियों ने बोधि वृक्ष के दर्शन किए

दिवस के अंत में सभी प्रतिभागियों ने बोधि वृक्ष के दर्शन किए और विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण करने के बाद सांची स्तूप पहुंचे, जहां उन्होंने बौद्ध विरासत के जीवंत स्वरूप को अनुभूत किया। आईएसबीएस के रजत जयंती समारोह के तीसरे और अंतिम दिन प्रो. अरविंद जामखेड़कर, प्रो. सिद्धार्थ सिंह और विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ विशेष सत्रों में विचार रखेंगे। समापन सत्र में श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के वेनेगल उपतिस्स नायक थैरो की उपस्थिति सम्मेलन को विशेष आध्यात्मिक स्वर प्रदान करेगी।

दीनबंधु महाराज का अल्प प्रवास, ग्रामीणों में उत्साह

सांचेत | ग्राम सांचेत में दीनबंधु महाराज के अल्प प्रवास से पूरा क्षेत्र भक्ति में डूब गया। उनके आगमन पर ग्रामीणों ने उत्साह से स्वागत किया। पूजा-अर्चना के समय वातावरण भक्तिरस से भर गया। महाराज जी के सान्निध्य में ग्रामीणों ने आशीर्वाद लिया। उन्होंने धर्म, सेवा और सद्भाव का संदेश दिया। ग्रामीणों ने उनके विचारों को आत्मसात किया। महाराज जी ने 1 जनवरी से 9 जनवरी 2026 तक होने वाली श्रीमद् भागवत कथा की तैयारियों को लेकर पूरे गांव का भ्रमण किया। उन्होंने ग्रामीणों से आत्मीय संवाद किया। इस पावन अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचे।

सच्ची बात, बेधड़क
दैनिक भास्कर

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

राष्ट्रीय हिन्दी मेल
दिनांक- 25/11/2025 पृष्ठ क्रमांक- 6 संस्करण- भोपाल

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में 50 शोध-पत्र प्रस्तुत
युद्धकाल में धर्म की व्यावहारिकता और चित्त शुद्धि पर विमर्श

रायसेन। साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज़ के रजत जयंती समारोह के दूसरे दिन सोमवार को बौद्ध धर्म,पालि भाषा,युद्धकाल में बौद्ध धर्म की व्यावहार्यता और अप्लाइड बुद्धिस्म पर चर्चा हुई। सामान्य सत्र में मुख्य वक्ता प्रो.अरविंद जामखेड़कर रहे। उन्होने मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की बौद्ध स्थापत्य कला पर विचार रखें। उन्होने साँची स्तूप के कई अनछुए पहलुओं को भी सामने रखा। प्रो सुष्मिता पाण्डे की अध्यक्षता में हुए सत्र में शोधार्थी ने मध्य प्रदेश की पुरातात्विक महत्व की साइट तुमेन पर अपने विचार रखे। भरहुत तथा साँची स्तूप के मानव मूल्यों को भी आंका गया। बौद्ध स्थापत्य कला में डर और साहस के दर्शन को जांचा गया। इसी तरह भारत और थाइलैंड के रिश्तों को भी बौद्ध सर्किट के साथ मापा गया। प्रो.बंदना मुखर्जी की अध्यक्षता में दूसरे सत्र में धम्म पद परए धम्म उपदेश में चित्त की शुद्धि के वर्णन,बंगाल में बौद्ध दर्शन का पुनर्रुत्थान,श्रीलंका में बुद्ध धम्म की विचार कथा, थेरगाथा में स्त्री का चित्रण, जातक कथाओं का हिंदी साहित्य पर प्रभाव जैसे विषयों पर चर्चा की गई। इस सत्र में भी 10 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। अंधश्रद्धा को छोड़ वेदना निवारण के लिए चित्त शुद्धि पर जोर दिया गया।

पत्रिका

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज के रजत जयंती समारोह

बौद्ध धर्म, पालि भाषा, युद्धकाल में बौद्ध धर्म की व्यावहारिकता और अप्लाइड बुद्धिस्म पर की चर्चा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सलामतपुर. सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज के रजत जयंती समारोह के दूसरे दिन सोमवार को बौद्ध धर्म, पालि भाषा, युद्धकाल में बौद्ध धर्म की व्यावहारिकता और अप्लाइड बुद्धिस्म पर चर्चा हुई। सामान्य सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. अरविंद जामखेडकर रहे। उन्होंने मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की बौद्ध स्थापत्य कला पर विचार रखे। उन्होंने सांची स्तूप के कई अनछुए पहलुओं को भी सामने रखा।

सोमवार को हुए तीन समानांतर सत्रों में 50 शोधपत्र पढ़े गए। प्रो सुष्मिता पाण्डे की अध्यक्षता में हुए सत्र में शोधार्थी ने मध्य प्रदेश की पुरातात्विक महत्व की साइट तुमेन पर अपने विचार रखे। भरहुत तथा सांची स्तूप के मानव मूल्यों को भी आंका गया। बौद्ध स्थापत्य कला में डर और साहस के दर्शन को जांचा गया। इसी तरह भारत और थाइलैंड के रिश्तों को भी बौद्ध सर्किट के साथ मापा गया।

प्रो. वंदना मुखर्जी की अध्यक्षता में दूसरे सत्र में धम्म पद पर, धम्म उपदेश में चित्त की शुद्धि के वर्णन, बंगाल में बौद्ध दर्शन का पुनर्रुत्थान, श्रीलंका में बुद्ध धम्म की विचार कथा, थेरगाथा में स्त्री का चित्रण, जातक कथाओं का हिंदी साहित्य पर प्रभाव जैसे विषयों पर चर्चा की गई।

शुद्धि पर जोर दिया

इस सत्र में भी 10 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। अंधश्रद्धा को छोड़ वेदना निवारण के लिए चित्त शुद्धि पर जोर दिया गया। तीसरे समानांतर सत्र में अध्यक्षता की प्रो. केदार नाथ शर्मा ने की। इस सत्र में बौद्ध दर्शन के व्यवहारिक पहलू पर विशेष चर्चा की गई। सत्र में अध्ययन किया गया कि किसी भी व्यक्ति के आम जीवन में किस प्रकार बौद्ध दर्शन उपयोगी होता है। वर्तमान दौर में कैसे बौद्ध दर्शन हल बन सकता हैं। बौद्ध दर्शन की कल्याणकारी अर्थव्यवस्था के बारे में चर्चा की गई। विश्व और चीन के संदर्भ में बौद्ध दर्शन के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया। वर्तमान काल में बौद्ध नीति शिक्षा, बौद्ध दर्शन में शांति की स्थापना, करुणा एवं कर्म इत्यादि विषयों पर 10 शोधपत्र पढ़े गए। आमंत्रित समस्त शिक्षक, विद्वान व शोधार्थियों ने बोधि वृक्ष के दर्शन किए। इसके बाद उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण भी किया। जिसके बाद सभी आमंत्रित सांची स्तूप भी पहुंचे।

दो विशेष सत्र आयोजित किए जाएंगे

आईएसबीएस के रजत जयंती समारोह में तीसरे और अंतिम दिवस दो विशेष सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिसमें प्रो. अरविंद जामखेडकर, प्रो. सिद्धार्थ सिंह और सांची विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वेद्यनाथ लाभ चर्चा करेंगे। दोपहर में समापन सत्र में श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के वेनेगल उपतिस्स नायक थेरो शामिल होंगे।